प्राता क्लास "ॐ" पिता श्री

(26.7.65) R:- जले ना क्यों परवाना ---- ओम शान्ति। बच्चे जानते हैं हम किस की नज़र के सामने बैठे हुए हैं। और इस नज़र सामने बैठने से हम २। जन्मों लिए निहाल हो जाते हैं अब तुम नज़र के सामने बैठे हो। अपने परलौकिक PPP की नज़र के सामने बैठे हो। जानते हो इस बाप की नज़र के सामने आने से हम २। जन्म स्वर्ग का वर्सा पाते हैं कब कोई साधु सन्त के पास जाते हैं तो कहते हैं यह तो नज़र से निहाल कर देते हैं अब नज़र से निहाल का अर्थ तो तुम ब्राह्मणों के सिवाए कोई समझ नहीं सकते। नज़र के सामने अभी तुम बैठे हो। बाप की नज़र में बच्चा, बच्चे की नज़र में बाप है बच्चा निहाल होता है बाप की नज़र से। बाप से ही वर्सा पाना है वो है हद के बच्चे। तुम हो बेहद के बच्चे। तुम नज़र के सामने बैठे हो। बराबर दो अक्षर सुन रहे हो मुझे निरन्तर याद करो तो तुम निहाल हो जाने गे। अर्थात स्वर्ग के मालिक बन जाए गे। बराबर सेकन्ड में नज़र से निहाल कर देते हैं एक सेकन्ड में J.M बाप से ही मिल सकती है वो है निराकार। इस शरीर से नहीं मिल सकते। PPP जानते हैं यह हमारे बच्चे आकर बने हैं जिन को निश्चय है हम PPP के सन्तान बने हैं ज़रूर स्वर्ग के मालिक बनें गे। नज़र से निहाल तो होना है स्वर्ग का मालिक बनना है स्वर्ग में है बादशाही। यहां यह सब नर्क के मालिक हैं अर्थात नर्क के निवासी हैं उस में भी नम्बरवार पद है भल अभी राजाई नहीं है परन्तु वो भी तो दिल में समझते हैं ना कि हम जैपुर का महाराजा था फलाड़ा महाराजा था नाम कोई जाता नहीं है लिखते हैं महाराजा आफ जैपुर। महाराजा आफ पटिआला। कहने में तो आता है ना। वह खुद भी जीते हैं उनकी वसांवली भी जीती है अभी वह भी प्रजा में आ गए हैं अब तुम बच्चे जानते हो हम श्री मत से अपना फिर से वोही देवी देवता राज्य स्थापन करते हैं बाप ने समझाया है यह भारत पावन दैवी राजीस्थान था अब पतित आसुरी राजीस्थान बन पड़ा है तुमको अब रूहानी बुद्धि अर्थात तीसरा नेत्र मिला है आत्मा जानती है अभी हम एक PPP को ही याद करते हैं उन से हमको वर्सा मिलना है भगवानो वाचय भी है कि मुझे याद करो और संग बुद्धि का योग तोड़ो। अपनी शरीर से भी तोड़ो। नगें बनो। मेरे पास तुम को नगें ही आना है तुम्हारे लिए ही बताते हैं। पहले २ तुम नगें आए थे आत्माएं सब अशरीरी होती हैं मूल वतन में अशरीरी होने कारण आवाज़ नहीं होता है इसलिए उनको निर्वाण वाणी से परे धाम कहा जाता है वहां सिर्फ आत्माएं ही रहती हैं सूक्ष्म वतन में मूवी होती है टाकी, मूवी और साएलेन्स आगे मूवी नाटक भी थी अभी तो टाकी है तुम बच्चों को साएलेन्स सिखलाई जाती है तुम अपने स्वधर्म में टिको। साएलेन्स घर को याद करो। टाक छोड़ना है बुड़ २ भी नहीं करनी है अन्दर में राम २ कहते हैं ना बाप कहते हैं वह भी छोड़ो। तुमको साएलेन्स बनना है वाणी से परे जाना है वा यहां रहते हुए, टाकी मूवी होते हुए एम आबजेक्ट बुद्धि में यह है हमको तो जाना है मुक्ती धाम। बाप ही M, J.M गति सद्गति देते हैं पहले २ आत्माएं निर्वाण धाम से आती हैं तुम जानते हो पहले हम वहां से आते हैं आए राज्य भोगते हैं तुमको बाप पढ़ाई से वर्सा दे रहे हैं जाने गे तो सभी। आत्माएं सब साएलेन्स में जानी हैं फिर हरेक को अपना २ पार्ट बजाने आना है देवी देवता धर्म का पार्ट अपना है इसलामी बौद्धी आदधर्म वालों का पार्ट अपना है यह सब बातें तुम बच्चों की बुद्धि में रहती हैं बाप के पास यह सारी नालेज है तब तो सुनाते हैं सभी राज़ समझाता हूं। तुमको आपसमान बनाता हूं। फिर तुम भी औरों को आपसमान बनायो। ज्ञानी और योगी बनायो जो नालेज मेरे में है वोही तुमको देता हूं। आत्मा ही ग्रहण करती है नम्बरवार पुरशार्थ अनुसार नालेज फुल बन जाती है कोई तो पूरे नालेज फुल बन जाते हैं कोई कम पुरशार्थ से इतनी नालेज वाले नहीं बनते। एम. आबजेक्ट तो यह है ना। बाप कहते हैं तुम बच्चों को आपसमान नालेजफुल बनाता हूं। तुम जानते हो हम कहां से आए हैं। कितने जन्म लिए यह चक्कर कैसे फिरता है इस में सब आ जाते हैं जैसे बीज है उस से झाड़ निकलता है इनकी आयु कितनी बड़ी हो जाती है फिर उनको जरजरी भूत अवस्था कहा जाता है अपने पास झाड़ था फिर वो एकदम सारा

जब जरी भूत हो गया तो कारना पड़ा। उनकी आयु कितनी थी समझते हैं कम से कम 125 वर्ष का ज़रूर होगा। बड़ के झाड़ की आयु बड़ी होती है बनियन ट्री का मिसाल दिया जाता है फाऊन्डेशन सड़ गया है बाकी सारा झाड़ खड़ा है अनेक प्रकार की बराईटी धर्मों का झाड़ है कितने अनेक धर्म मठ पन्थ हैं बराईटी धर्मों का झाड़ दिखाया है पिछाड़ी तक थोड़े २ आते रहते हैं पहले २ जो पते निकलते हैं वह बहुत अच्छे शोभते हैं उस समय ताज़े सतो प्रधान हैं फिर सतो रजो तमो बन जाते हैं वैसे ही यह भी मनुष्य सृष्टि रूपी झाड़ है आधा कल्प तुम राज्य करते हो फिर आहस्ते २ नीचे उतरते जाते हैं उतरती कला और चढ़ती कला होती है चढ़ते फर्श से है थोड़ा राईम 50-60 वर्ष लगता है पूरी राजधानी स्थापना में। बाप समझाते हैं मैं ही संगम पर आकर दैवी राजीस्थान सूर्य वंशी चन्द्रवंशी स्थापन करता हूँ। जो फिर नई दुनियां अमर लोक में अपना राजभाग करते हैं इनको ही संगम युग कहा जाता है दूसरा कोई संगम पर नहीं आता है संगम की बात तुम्हारे लिए ही है दूसरा कोई नहीं कहते कि हम संगम पर आते हैं सिर्फ एक बाप ही खुद कहते हैं यह बात कोई शास्त्र में भी नहीं है मैं फिर से कब आता हूँ। यह कोई को पता नहीं पड़ सकता। यह सिर्फ तुम बच्चों को ही पता पड़ता है कल्प २ यह पार चलता है हमारा झाड़ पुराना होता है फिर संगम युग पर उनका फाऊन्डेशन लग रहा है यह है पतित दुनियां। सतयुग है पावन दुनियां। गाते भी हैं हम पतितों को पावन बनाने आयो। जानते हैं हम पतित हैं ज़रूर पावन भी यहां होंगे। सब पतित से पावन बनते हैं फिर जब आवेंगे तो पावन ही होंगे। परन्तु सब को इकट्ठा तो आना ही नहीं है बाप कितना अच्छी रीत समझाते हैं अभी यह अमृतसर का प्रिन्सीपाल बैठा है तो क्यों ना यह सब को नालेज देनी चाहिए। तो सब जान जाएं। वर्ल्ड की हिस्ट्री जाग्राफी क्या है यह वर्ल्ड की हिस्ट्री जाग्राफी कैसे रीपीट होती है यह किस को पता नहीं है गाड इज़ वन। क्रिएटर इज़ वन। और कोई क्रिएटर है नहीं ना उपर कोई दुनियां है ना नीचे कोई दुनियां है यह तो एक ही मान्डवा है यह जो कहते हैं आकाश अकाश, पताला पताल,-- यह सब गपोड़े हैं समझते हैं स्टार्स के उपर दुनियां है परन्तु वहां थोड़ई किस की राजधानी हो सकती। बाप सारा राज़ बैठ समझाते हैं प्रिन्सीपाल को भी कहते हैं जो अच्छे २ स्टुडन्ट हो उन्हों को यह वेहद की वर्ल्ड की हिस्ट्री जाग्राफी क्यों नहीं समझाते? क्यों नहीं गवर्मेन्ट को अपरोच करते हो। यह वर्ल्ड की हिस्ट्री जाग्राफी कोई भी नहीं जानते हैं तो क्यों ना उन्हों को यह समझाया जाए तो उनकी भी उन्नती हो। बड़े आफीसर्स को भी अपरोच कर सकते हैं क्यों नहीं इन सब को यह नालेज दी जाए। बड़ा युक्ती से समझाना है सतयुग में आदी सनातन देवी देवतायों की राजधानी थी उन्हों को यह कैसे मिली? उन्हों ने भारत में यह राज्य कैसे प्राप्त किया? शास्त्र में दिखाया है देवतायों दैत्यों की लड़ाई लगी फिर देवतायों ने जीत लिया। महाभारत की लड़ाई एक ही लगी है उस के बाद फिर कोई लगाई लगी ही नहीं। तो बच्चों को सिक्षा दी जाती है क्यों नहीं स्कूल में बच्चों को यह नालेज देते हो। बोलो हम वर्ल्ड की हिस्ट्री जाग्राफी जानते हैं तो क्यों नहीं सब को मिलनी चाहिए। कायदा है कोई नई इनलेशन तो बादशाह को दिखाते हैं फिर उन द्वारा वृद्धि को पहुंचाते हैं बाप ने बच्चों को सिखलाया है वर्ल्ड की हिस्ट्री जाग्राफी का चक्कर। इन को कहा जाता स्व आत्मा को, सृष्टि के आदी मध्य का नालेज मिलता है। जिस से २ जन्म लिए चक्रवर्ती राजा बन जाते हैं। समझाना पड़े भारत में सतयुग त्रेता में सूर्यवंशी चन्द्रवंशी राज्य था। भारत जैसा ऊंचा कोई था नहीं फिर कैसे बादशाही गवाई यह कोई नहीं जानते। तो क्यों ना वेहद की हिस्ट्री जाग्राफी की सब को नालेज मिले। सो सिताराम बाप के कोई दे ना सके। यह वेहद का बाप ही बतावेगा।

लिखते है बाबा फलाड़ा रूठ गया है आते नहीं है। तो बाबा लिख देते है क्या मुरली को फाकर्ती दी है मुर्ली को फाकर्ती दी तो मुरली सुनाने वाले शिव बाबा को दी। जगाना पड़ता है। कोई बात पर रूठ कर मुरली नहीं सुनते है। तरस पड़ता है। पता नहीं विषय सागर में डूब ना पड़े। फिर पत्र आद का भी असर नहीं होता है। माया एकदम पकड़ लेती है। महारथी को भी माया एकदम पकड़ लेती है। गफलत करने से माया एकदम कचा खा जाती है। इसलिए बाबा कहते है खबर दार रहना। तूफान बहुत आवेंगे परन्तु खबरदार रहना। एक को भूत आए तो दूसरे को खबरदार करना है। एक दो को सावधान कर उन्नती को पाना है। इसलिए युगल हीं चलते है तो ठीक होता है। एक दो को उठाते है। काम चिता पर बैठने से जल मरेंगे। अब तो ज्ञान चिता पर बैठना है। यह भी शास्त्रों में है ना सागर के बच्चे ------ सब बच्चे है ना। कितने दुःखी है। बाप फिर ज्ञान की वर्षा कर सब को जगाते है। यह है कयामत का समय। सब का हिसाब किताब चुकु होना है। तुम्हारे पाप का खाता चुकु हो जाना है। जब सतो प्रधान बन जावेंगे तो जैसे कि तुम्हारा सुख जमा होता जाता है भविष्य के लिए यहां जमा करना है। गोल्डन एज में आना है यह गति बहुत अच्छा है। कहते है पुरानी पाप की दुनियां नर्क से पुण्य की दुनियां स्वर्ग में ले चलो। बाप ही स्वर्ग की स्थापना नर्क का विनाश कराते है। द्वापर अनुसार रावण राज्य खतम होता है फिर सतयुग में रावण कब बनाते ही नहीं। यह भारत का आधा कल्प का पुराना दुश्मन है। जिस को जलाते ही आते है। तुम बच्चे जानते हो अभी बाकी 8-10 वर्ष जलावेंगे। फिर रावण राज्य ही खतम हो जावेगा। सब मिट्टी में मिल जावेंगे। यह बड़ा भारी यज्ञ है। इसमें आहुती चाहिए। पिछाड़ी में यज्ञ की सब सामग्री स्वाहा कर देते है ना। यह है रुद्र ज्ञान यज्ञ। सब इसमें स्वाहा हो खतम हो जावेंगे। [illegible] बच्चों को बाप [illegible] कर सेन्टर चले है तो [illegible] उनको भी गद्दी तो मिलती है ना। कलास जितना सिक्ख हो। जिस में सब सुन सकें बस। हमको तो अब गोल्डन एज में जाना है। सिवाए याद के और कोई उपाय नहीं है। बाप कहते है बच्चे तुमको अपना और दूसरों का कल्याण करना है। तुम यह हास्पीटल खोलो। बहुतों की आशीर्वाद तुमको मिलेगी। मनुष्य कालेज खोलते है औरों के लिए खुद तो न पड़ते है। तो उनको भी दूसरे जन्म में विद्या अच्छी मिल जाती है। बाप समझाते है कोई गरीब हो वा शाहुकार हो सिर्फ 3 पैर पृथ्वी का प्रबन्ध हो जिस में बैठ ज्ञान और योग सिखलावे। पत्थर से पारस बनावे। 3 पैर पृथ्वी के भी नहीं देते है। कहते यह भाई बहन बनाते है। विश्व का वसी छुड़ाते है। फिर दुनियां कैसे चलेगी। गालियां देते है। यह तो गाया हुआ है कलंगी धर बनने वालों को कुतरे भौंकते है। तुम अब विश्व के मालिक बनते हो। कितनी भौंक करते है। लड़ पड़ते है। कहते K की इतनी रानियां थी। हम तो फिर भी एक रखते है। बहुत तो बाज़ारी बैल भी होते है। यह वर्षोल्प है ना। भारत शिवाल्प था। शिव बाबा ने स्वर्ग स्थापन किया। अब नर्क है फिर बाप शिवाल्प बनाते है। कई तो माताएं भी विश्व विगर रह नहीं सकती। अब किसको पुकारें। धणी धोड़ी तो कोई है नहीं। विश्व के लिए केस भी कर देते है। इसलिए शुरू में बाबा ने डैरेक्शन निकाला था राव चिठी ले आई थी कि हम ज्ञान अमृत पीने जाती है। (हिरदी सुनाना) अभी तुम बच्चों का खाना अबाद करने लिए तुमको श्री मत मिल रही है। घर बार भी संभालते रहो। साथ 2 यह भूं भूं करते रहो। जितना सहन करोगे अच्छा है। अत्याचार हो तब तो पाप का घड़ा भरे। बाप समझाते है बच्चे अपना चार्ट रखो। अमृत वेले याद करो। तो तुम्हारी यात्रा का चार्ट आहस्ते 2 बढ़ता जावेगा। मेहनत विगर थोड़ई ऊंच पद पावेंगे। पड़ेंगे ही नहीं तो नापास हो जावेंगे। और क्या होगा। श्री मत पर चलना है विश्व का मालिक बनना कम बात है क्या। पान का बीड़ा उठाना है। यहां तो परिक्षा भी ली जाती है इकठे रह इकठे सो कर दिखायो। बीच में ज्ञान तलवार हो। इकठे रहेंगे ही नहीं तो मालूम कैसे पड़ेगा। अच्छा [illegible]